आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023

Received: 07/09/2023; Accepted: 14/09/2023; Published: 24/09/2023

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्थान

डॉ. अजय कुमार
राँची, झारखण्ड
मो.नं.-8340596521, 9709020322
ई-मेल : ajaypro1320@gmail.com

डॉ. अजय कुमार, **वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्थान** ,आखर हिंदी पत्रिकाखंड 3/अंक 4/सितंबर 2023,(403- 406)

हिन्दी आज कई वर्षों के परिस्कृत के पश्चात् हमें प्राप्त हुई है। आरम्भ में संस्कृत से पाली, पाली से प्राकृत और प्राकृत से अपभ्रंश से टूटकर बनी है। भारतीय संविधान में अनुच्छेद-343-I में संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है, लेकिन यह अब किताबों में ही सिमट कर रह गयी है। जब देश गुलाम था, तब अंग्रेजों तथा अंग्रेजों को हटाओ का नारा रहा करती थी, लेकिन आज अंग्रेज चले गए लेकिन अंग्रेजी छोड़ गए।

आज के समकालीन युग में हिन्दी का महत्व कम होता चला जा रहा है। हिन्दी में बोलना, कहना, बातें करना खुद में असहज महसूस करते हैं। हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी बोलना ज्यादा सहज महसूस करते हैं। हम ये नहीं कह रहे हैं कि अंग्रेजी भाषा अच्छी नहीं है या खराब है, लेकिन भारतवासी होकर अंग्रेजी शोभा नहीं देती है। जैसे - स्पेन की स्पेनिश, फ्रांस की फ्रेंच, रूस की रसिया, जापान की जैपनिज, चीन की चीनी इत्यादि भाषा है। सभी देश की एक भाषा है, लेकिन भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा 'हिन्दी' है। फिर भी भारत में अब आज के समय में हिन्दी भाषा के प्रति रूझान कम होता जा रहा है। इसका स्तर गिरते जा रहा है।

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार के धर्म, जातियाँ, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, पर्व-त्योहार, खान-पान, रहन-सहन, पहनावा इत्यादि पायी जाती है। सभी प्रांत, प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ हैं, जिसमें सबसे अधिक हिन्दी लोकप्रिय भाषा है। हिन्दी हमारी राष्ट्र की बिंदी है।

हिन्दी में निकटता, सहजता, प्रेम ज्यादा है, जिसमें एक-दूसरे से संवाद स्थापित करने में सरलता होती है। हिन्दी भाषा में सभी के लिए सम्माननीय शब्दों का प्रयोग होता है। छोटे से लेकर बुजुर्ग तक सभी का अपना एक सम्मानजनक शब्द है और उसी शब्दों से उनको सम्बोधन किया जाता है, लेकिन अंग्रेजी भाषा में ऐसा नहीं है। छोटे से लेकर बुजुर्गों तक रिश्तों और रिश्तेदार, अपने तथा अंजान लोगों के लिए एक शब्दों का उपयोग होता है। हिन्दी भाषा में अपनापन एवं लगाव महसूस होता है। विदेशों में जब दो भारतीय आपस में मिलते हैं तो उनमें एक भारतीय होने तथा आपसी प्रेम दिखाई पड़ता है, वह एक-

दूसरे से वहाँ पर अंग्रेजी भाषा जानने के बावजूद वे हिन्दी भाषा में बात करते हैं। हिन्दी विश्व के किसी भी कोने पर हिन्दी दो लोगों को करीब लाने का सशक्त माध्यम है।

आज हिन्दी सारे विश्व में दूसरी सबसे ज्यादा बोली और समझे जाने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा सरलता, सहजता, संवेदना, बोधगम्य होने के कारण विश्व जगत् में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाई है। हिन्दी जिसके मानवीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानवीकृत रूप है, जिसमें संस्कृत के तत्सम् तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फारसी शब्द कम है। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है, क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है।

हिन्दी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्धु नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आसपास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। ईरानी जब भारत आए तो सिन्धु को हिन्दू बोलते थे। ईरानी लोग 'स' का उच्चारण 'ह' तथा 'ध' का उच्चारण 'द' करते थे। वहीं से हिन्दू, हिन्द होकर फिर हिन्दी हो गया। कहा जाता है कि अमीर खुसरो ने देशी भाषा को 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' या 'हिन्दुई' नाम दिया है। अमीर खुसरो लिखते हैं कि - "तुर्क-हिन्दुस्तानिन्दय मैं हिन्दवी गोषय जनाबे....।। जुज वै चन्द नज्य हिन्दी नीज नज्जर देस्तान करदा शुदा अस्त।"[1]

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा कहते हैं कि "सत्रहवीं सदी तक 'हिन्दी' और 'हिन्दवी' शब्द समानार्थक थे और सामान्यतः मध्यप्रदेश की भाषा के लिए प्रयुक्त होते थे। उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी का नामकरण भारत के हिन्दुओं ने नहीं, ईरान और अरब से आये और इस देश में बसे मुसलमानों ने किया था। लेकिन मुसलमानों ने हिन्दी प्रदेश में फैली विभिन्न बोलियों को न अपनाकर दिल्ली और मेरठ की बोली 'खड़ी बोली' को अधिक प्रश्रय दिया। इसके विपरीत हिन्दुओं ने ब्रजभाषा, अवधी तथा अन्य देशी भाषाओं में रचनाएँ की। बाद में चलकर ये लोग भी मुसलमानों के मार्ग पर चले। इससे सिद्ध होता है कि देश के मुसलमानों ने जिस अर्थ में देशी भाषा (खड़ी बोली) को ग्रहण किया, वहीं हिन्दी की सही दिशा थी। आज हिन्दी का अर्थ खड़ी बोली या उसमें लिखा जाने वाला साहित्य ही समझा जाता है। इस हिन्दी को हमारे साधु-संतों ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में फैला दिया था। अतः यह धीरे-धीरे सारे देश में रच-बस गयी।"[2]

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी के शब्दों के अनुसार - "हिन्दी एक महान् सम्पर्क-साधक भाषा है।"[3]

बाबू केशवचन्द्र सेन लिखते हैं - "हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र-ई प्रचलित।"[4]

बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 1876 ई। में 'बंगदर्शन' में लिखा है कि - "हिन्दी शिक्षा ना करिले, कोनो क्रमे-ई चलिबे ना।"[5]

हिन्दी विभिन्न क्षेत्रों में सर्वत्र रूप से उपयोग हो रही है। शिक्षा, चिकित्सा, बैंकिंग, सभी सरकारी कार्यालय, पुलिस, कोर्ट-कचहरी, व्यवसाय, मीडिया, प्रिंट मीडिया, वाणिज्य, अखबार, पत्र-पत्रिका, विज्ञान, अंतरिक्ष, पुरातत्व विभाग, कला, साहित्य, टी०वी०, रेडियो, सिनेमा, प्राईवेट कंपनियाँ,

सेल-मेल इत्यादि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का वर्चस्व कायम है। आज हिन्दी भाषा अपनी विशेषता एवं गुणों के कारण इंटरनेट पर अपना स्थान बनाया है। आज लगभग 2000 से ज्यादा हिन्दी भाषा के वेबसाईट, 100 से ज्यादा हिन्दी पत्रिकाएँ, विकिपीडिया और 15000 से ज्यादा ब्लॉग, आज हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। साथ ही हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्यकार, पत्रकार, चिंतक, विद्वान, मेधावी, विश्वविद्यालय, संगोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, विश्व हिन्दी सम्मेलन इत्यादि हिन्दी के विकास में अग्रणीय योगदान दे रहे हैं।

भारत के पड़ोसी देश और दुनिया के अन्य देशों में लगभग 46 ऐसे देश हैं, जहाँ के शिक्षा-संस्थानों में हिन्दी के पठन-पाठन की सुविधा है। मॉरिशस, फिजी, गुयाना, त्रिनिडाड आदि देशों में बड़ी संख्या में अप्रवासी भारतीय है, जिनकी आबादी 40 प्रतिशत से ऊपर है, वह हिन्दी बोलते-समझते और पढ़ते-लिखते हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान एवं म्यांमार आदि देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पाठ्यक्रम चलते हैं।

इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालयों तथा शिकागो, कैलिफोर्निया, कोलंबिया, वाशिंगटन आदि विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया अध्ययन विभाग के अंतर्गत हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा है। ब्रिटेन के लंदन एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर पर हिन्दी का पठन-पाठन संपन्न होता है। इस प्रकार विदेशों में बसे भारतीयों ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रवासी देशों में हिन्दी के पठन-पाठन सम्पन्न होता है। इस प्रकार विदेशों में बसे भारतीयों ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रवासी देशों में हिन्दी के पठन-पाठन एवं विकास के लिए अनेक संस्थाओं एवं समितियों का गठन किया है।

आज हिन्दी का क्षेत्रफल कश्मीर से कन्याकुमारी या राजस्थान से त्रिपुरा, मेघालय और अरूणाचल प्रदेश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसका प्रभाव क्षेत्र वैश्विक स्तर तक पहुँच चुका है। हिन्दी के वैश्विक दायरे के संदर्भ में डॉ० सुरेश माहेश्वरी कहते हैं - "आज विश्व में भारत ने अपनी पहचान बना ली है। भारत एक जनतांत्रिक राष्ट्र है। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का मुखिया भारत है। सार्क परिषद् का प्रणेता और संस्कृति की दृष्टि से भी वह विश्व का पथ प्रदर्शक और अगुआ है। ऐसे भारत की भाषा हिन्दी है। इसलिए यदि भारत से निकटता बनानी है तो हमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन को महत्व देना चाहिए। ऐसा विश्व के सभी राष्ट्रों ने सोचा। दूसरे भारतवंशी लोग रोजगार हेतू पश्चिम के राष्ट्रों में गए हैं और पूरब के राष्ट्रों में भाईचारा, संस्कृति को लेकर अपना स्थान बनाया। इस कारण से भी हिन्दी का अपना वैश्विक दायरा निर्माण हुआ।"[6]

टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रो० होजुमितनाका कहते हैं - "विश्व भर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिन्दी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे विद्वान भी सक्रिय है जो हिन्दी को प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं।"[7]

आज विश्व में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले समाचार-पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी भाषा के हैं। दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरिशस, चीन, जापान, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा एवं अमेरिका तक हिन्दी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों द्वारा प्रसारित हो रहे हैं, जिनके दर्शकों का एक बड़ा वर्ग है। हिन्दी आज नवीन प्रौद्योगिकी अर्थात् ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट एवं वेब की दुनिया में आसानी से पाया जा सकता है। इसके

अतिरिक्त गूगल, यू-ट्यूब, जी-मेल, याहू, रेडक्लिफ, माइक्रोसॉफ्ट इत्यादि जैसी विश्व स्तरीय कंपनियाँ व्यापक बाजार और मुनाफा देखते हुए हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही है। डॉ० अर्जुन चौहान कहते हैं - "संगीत, फिल्म, रेडियो और टेलीविजन के विविध चैनलों के जरिए हिन्दी ने अपनी भौगोलिक सीमाओं को तोड़ दिया। उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण ने दुनिया के विभिन्न देशों को हिन्दी को अपनाने के लिए विवश कर दिया। भूमण्डलीकरण के नाम पर दुनिया के सारे सौदागरों को भारत जैसे विशाल देश में पहुँचकर व्यवसायिक सफलता अर्जित करने हेतू हिन्दी को अपनाने के लिए मजबूर बना दिया। परिणामस्वरुप वैश्विक संदर्भ में हिन्दी अपनी शक्ति का परिचय देती है।"[8]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्थान आज के समय में उच्च श्रेणी की ओर अग्रसर है। भविष्य में वह स्थान प्राप्त कर लेगी, जिसके लिए आज संघर्षशील हैं। हिन्दी सशक्त, प्रवाहमान एवं जीवंत है, जिसमें अपनी विपुल सम्पदा के माध्यम से अन्य भाषाओं को आत्मसात कर उन्हें अपना रूप देने की क्षमता रखती है। हिन्दी भाषा में प्रवाह है, वेग है, यह प्रकृति, संस्कृति, परिवेश एवं परिस्थिति के अनुरूप ढल जाने की क्षमता रखती है और वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी के समक्ष आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में हिन्दी पूर्णतया सशक्त है। हिन्दी केवल भाषा नहीं, हिन्दी हमारे इतिहास, देश, समाज, परम्परा और संस्कृति से जुड़ी धरोहर है, हमारी पहचान है, अस्मिता है। आज हम सभी भारतवासी दृढ़ इच्छाशक्ति दायित्वबोध के साथ हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाने, विश्व के उच्च श्रेणी में पहुँचाने में अपनी कर्तव्यों का निर्वहन करें, ताकि हिन्दी भाषा विश्व की भाषा के रूप में स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची :

1. डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), गोविन्द मित्र रोड, पटना-800004, 21वाँ संस्करण, 1987, पृष्ठ-7
2. वही, पृष्ठ-7
3. वही, पृष्ठ-8
4. वही, पृष्ठ-8
5. वही, पृष्ठ-8
6. हिन्दी की विकास यात्रा, सं० डॉ० एस० प्रीति, डॉ० उषा रानी राव, डॉ० एस० रजिया बेगम, सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ-76
7. वही, पृष्ठ-75
8. वही, पृष्ठ-77

****